FOR, U.G. PART-II (HONS)
PAPER-IV

UNIFICATIONS OF ITALY

Page No.:
Date:

इटली का एकीकरण

इटली का एकीकरण इटली में राष्ट्रीयता के उत्थान की अभिव्यक्ति था। एक अति गौरवान्वित अतीत, क्रिश्चियन विश्व का धार्मिक प्रधान एक भाषा एवं एक धर्म होने के बावजूद 19वीं सदी के प्रारम्भ में इटली एक भौगोलिक इकाई से अधिक कुछ नहीं था। अल्प संख्यनों वाले इस नवोदित राष्ट्र में अनेक राजनीतिक सत्ता के केन्द्र तथा विदेशी प्रभुत्व राष्ट्रीयता के उत्थान में बाधक थे।

1796-1814 ई. के दौरान लगभग दो दशकों तक नेपोलियन के एकछत्र शासन एवं फ्रांसीसी क्रांति के विचारों ने इटली में राष्ट्रीयता को प्रोत्साहित किया। जगह-जगह राजनीतिक संगठन बने जिनमें 'कारबोनरी' नामक गुप्त क्रांतिकारी संगठन भी था। परंतु वियना कांग्रेस में यूरोप में शक्ति-संतुलन कायम करने के प्रयासों के तहत इतालियन राष्ट्रवाद पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। वियना की महाशक्तियों ने इटली में सत्ता के कई केन्द्र स्थापित कर दिये। आस्ट्रिया को लोम्बार्डी, वैनेशिया, हैब्सबर्ग राजघराने को पारमा, मोडेना लयूका, टस्कनी, पोप को रोम, रोमाग्ना, बोलोग्ना तथा बूर्बो राजवंश को नेपल्स तथा सिसली सौंप दी गई। आस्ट्रिया ने बूर्बो तथा पोप से समझौता कर विद्रोह के दमन हेतु उनके राज्यों में भी अधिकार पा लिया। इस प्रकार वियना ने इटली को आस्ट्रिया का कृपापात्र बना दिया। मात्र एक सार्डीनिया-पीडमौंट स्वतंत्र राज्य था, जिसपर सेवॉय राजवंश का शासन था। इसके बावजूद वियना ने सत्ता केन्द्रों की संख्या कम और निश्चित कर इटली के एकीकरण का एक चरण पूरा किया।

वियना की अवस्था को बनाये रखने के लिए यूरोपीय महाशक्तियों ने मिलकर एक 'कन्सर्ट ऑफ यूरोप' कायम किया। आस्ट्रिया इसका सदस्य था जो घोर प्रतिक्रियावादी 'मेटरनिक' के नेतृत्व में इटली की किसी भी राजनीतिक गतिविधि को कुचलने के लिए यूरोपीय व्यवस्था का बहाना ले सकता था, परंतु इसके बावजूद 1848 की क्रांतियों में मेटरनिक के पतन तक इटली के राष्ट्रवादी आंदोलन का विकास

Scanned with CamScanner

तीन महत्वपूर्ण स्तरों पर चलता रहा। महान इटालवी दार्शनिक 'जोसेफ मेजिनी' जिसके विचारों में राष्ट्रवाद एवं मानववाद का मिश्रण था अपने 'यंग इटली' नामक युवा संगठन एवं पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से इटली राष्ट्रवादी विचारों को प्रोत्साहित कर रहा था। 1830-31 की क्रांतियों में उसकी सक्रिय भागीदारी के कारण वह निर्वासन का जीवन व्यतीत कर रहा था। मेजिनी का उद्देश्य इटालवी प्रायद्वीप से विदेशी आधिपत्य समाप्त करना और 'संयुक्त गणतंत्र' की स्थापना था। मेजिनी के जनतांत्रिक गणतंत्र की अवधारणा में जिन लोगों को सामाजिक क्रांति एवं सम्पत्ति के लिए खतरे की गंध लगती थी, उन्होंने 'नवगुएल्फ आंदोलन' चला रखा था, जो पोप के नेतृत्व में एकीकरण हेतु प्रयासरत था।

तीसरा और सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयास सार्डीनिया नरेश 'प्रिंस अलबर्ट' के अधीन चल रहा था। इन लोगों का दृष्टिकोण व्यावहारिक था जो इटली में संवैधानिक राजतंत्र स्थापित करना चाहते थे। 'काउंट कावुर' जो पहले वित्तमंत्री था और फिर सार्डीनिया का प्रधानमंत्री बना एक राजनीतिक दूरदर्शी व्यक्ति था उसके पास इटली के एकीकरण की एक सम्पूर्ण योजना थी। सर्वप्रथम उसने राजनीतिक एकीकरण से पूर्व आर्थिक एकीकरण को आवश्यक माना। उसकी योजना में सार्डीनिया को आर्थिक उन्नति कर इटली के एकीकरण का नेतृत्व करना था। सार्डीनिया में विभिन्न सुधारों के द्वारा उसने कृषि क्रांति एवं औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देकर आर्थिक विकास को सुनिश्चित किया।

1848 में सिसली के शुरू विद्रोह ने समस्त इटली को अपनी चपेट में ले लिया तथा मेजिनी के नेतृत्व में 'रोमन गणतंत्र' की अल्पकालिक स्थापना हुई पर कैथोलिकों की समर्थन पाने की आवश्यकता के कारण फ्रांस ने पोप के साथ मिलकर एक सैनिक कारवाई द्वारा रोमन गणतंत्र को समाप्त कर दिया। मेजिनी का स्वप्न टूट गया पर एक बात यह भी स्पष्ट हो गई कि पोप के नेतृत्व में इटली का एकीकरण नहीं हो सकता।

अब काउंट कावुर और सार्डीनिया एकमात्र आशा के केन्द्र थे। कावुर का यह विश्वास था कि इस महान कार्य में उसे

Scanned with CamScanner

एक विदेशी शक्ति की सहायता आवश्यक होगी। फलतः उसने आस्ट्रिया के विरुद्ध विदेशी सहायता जुटाना अपनी विदेश नीति का मुख्य लक्ष्य बनाया। काबूर को क्रीमिया के युद्ध ने एक अवसर दिया तथा उसने बड़ी कुशलता से फ्रांस तथा इंग्लैंड के पक्ष में अपने 18000 प्रशिक्षित सैनिकों को भेज उनकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। युद्ध के पश्चात पेरिस में उसे अन्य राष्ट्रों के समक्ष बैठने का मौका तो मिला ही 1858 की गर्मियों में प्लौम्बियर्स नामक स्थान पर 'नेपोलियन तृतीय' के साथ एक अनौपचारिक भेंट के दौरान उसने इटली का भाग्य तय कर लिया। नेपोलियन से अपनी पुत्री की शादी एवं नीस को सौंपने के बदले में भविष्य के किसी युद्ध (आस्ट्रिया) में फ्रांस का सैनिक समर्थन हासिल कर लिया। नेपोलियन कारबोनरी का सदस्य रह चुका था तथा बोनापार्ट परिवार इटली को अपना खानदानी जायदाद समझता था, इसीलिए उसने समर्थन देना स्वीकार कर लिया।

युद्ध का बहाना तलाशकर काबूर ने आस्ट्रिया को युद्ध में उतार लिया। फ्रांसीसी सेनाएँ सार्डीनिया के पीछे आ गईं। आस्ट्रियाई पराजय की खबर से समस्त इटली आंदोलित हो उठा लेकिन इसी बीच फ्रांस में कैथोलिक प्रतिक्रिया हुई। प्रशा भी इटली में फ्रांसीसी प्रभाव बढ़ने नहीं देना चाहता था। फ्रांसीसियों को यह युद्ध अनावश्यक एवं असाध्य प्रतीत होने लगा जिसके चलते फ्रांस ने जुलाई 1859 में "विलाफ्रेंका" में आस्ट्रिया के साथ युद्ध विराम की संधि कर ली। काबूर अकेले युद्ध जारी रखना चाहता था पर 'विक्टर इमैनुअल तृतीय' ने दूरदर्शिता का परिचय दिया तथा काबूर के इस्तीफे के बाद भी उसने ज्यूरिक में Nov. 1859 में युद्ध विराम की संधि कर ली। सार्डीनिया को लोम्बार्डी मिला किंतु वेनेशिया जीते जाने के बाद भी आस्ट्रिया के आधिपत्य में बना रहा। जन. 1860 में पारमा, मोडेना, रोमाग्ना और टस्कनी के शासकों को एक विद्रोह के द्वारा खदेड़ दिया गया तथा जनमत संग्रह के बाद में राज्य सार्डीनिया में मिल गये। नीस-सेवॉय फ्रांस को प्राप्त हुये।

इसी बीच महान् देशभक्त लड़ाका "गैरीबाल्डी" का उदय हुआ जिसने जिनोवा में 1000 लाल कुर्ती वाले प्रशिक्षित दल को संगठित कर रखा था। नेपल्स-सिसली में विद्रोह की

Scanned with CamScanner

स्थिति में उसने सैनिक कारवाई कर सत्ता पर अधिकार कर लिया। अपनी सफलता से उत्साहित होकर वह रोम पर चढ़ाई करना चाहता था। काबूर की सहानुभूति उसके प्रति थी पर रोम पर अधिकार का सीधा अर्थ था - फ्रांस से युद्ध। काबूर ने सेना लेकर गैरीबाल्डी को रोका। गैरीबाल्डी ने अपनी राष्ट्रभक्ति का परिचय देते हुए नेपल्स-सिसली को साडीनिया को सौंप दिया। 1861 तक रोम तथा वेनेशिया को छोड़ समस्त इटली एक हो गया था। सम्पूर्ण इटली के प्रतिनिधियों ने "विक्टर इमैनुअल" को नये राज्य का नरेश घोषित किया।

जून 1866 में आस्ट्रिया-प्रशा के हाथों पराजित हो गया तथा वेनेशिया भी इटली का अंग हो गया। इसी प्रकार 'सेदा' में प्रशा के हाथों फ्रांस की पराजय हुई तथा एक जनमत-संग्रह के पश्चात् रोम भी नये इटली में समाविष्ट हो गया। सिर्फ एक छोटा सा क्षेत्र पोप के निजी राज्य के रूप में रहने दिया गया। रोम के साथ ही इटली का एकीकरण पूर्ण हो गया।

साडीनिया-पीडमौंट के नेतृत्व में यह लड़ाई लड़ी गई जिसके सम्पन्न होने के पश्चात् इस राज्य का अस्तित्व भी जाता रहा। काबूर ने कभी भी बिस्मार्क की तरह इटली का साडिनियाकरण नहीं करने को सोचा। यह उसकी कूटनीति, दूरदर्शिता, गैरीबाल्डी की दृढ़संकल्पिकता एवं मैजिनी का आदर्श ही था जिसके द्वारा इटली जैसे एक अल्प संसाधनों वाले राष्ट्र का एकीकरण पूर्ण हुआ।

—X—

Scanned with CamScanner